ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

200वीं महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती सदैव सत्य 1824-2024

वर्ष 46 | अंक 37 | पृष्ठ 08 | दयानन्दाब्द 200 | एक प्रति ₹ 5 | वार्षिक शुल्क ₹250 | सोमवार, 21 अगस्त, 2023 से रविवार 27 अगस्त, 2023 | विक्रमी सम्वत् 2080 | सृष्टि सम्वत् 1960853124
दूरभाष/ 23360150 | ई-मेल/ aryasabha@yahoo.com | इन्टरनेट पर पढ़े/ www.thearyasamaj.org/aryasandesh

आर्य समाज के इतिहास में पहली बार

आगरा के दो रेलवे स्टेशनों पर वैदिक साहित्य के स्टालों का शुभारंभ

सभा द्वारा वैदिक साहित्य के प्रचार की एक नई शुरुआत

20 अगस्त 2023 को आगरा कैंट एवं आगरा फोर्ट रेलवे स्टेशनों पर वैदिक साहित्य के स्टालों के शुभारंभ अवसर पर दिल्ली सभा, आर्य केन्द्रीय सभा, वेद प्रचार मंडल, आर्यवीर दल एवं क्षेत्रीय आर्य समाजों के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्यों सहित अन्य महानुभाव।

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की प्रेरणा से आर्य समाज लगातार मानव मात्र को सुदिशा प्रदान करता आ रहा है। आर्य समाज द्वारा जहां एक तरफ समाज में फैले हुए अज्ञान, अविद्या, अंधकार, ढोंग, पाखंड और अंधविश्वास को दूर भगाने का कार्य किया गया, वहीं सामाजिक कुरीतियों के प्रति भी मानव समाज को निरंतर जागृत और सजग करने के लिए अभियान चलाए गए। इसके साथ ही वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों के प्रचार-प्रसार हेतु आर्य समाज का वैदिक साहित्य अपने आपमें एक बहुत बड़ी ज्ञान संपदा है, जिसका हमारे पूर्वजों ने एक दृढ़ संकल्प शक्ति के साथ सृजन किया। आर्य समाज का वैदिक साहित्य हजारों की संख्या में नहीं बल्कि लाखों पुस्तकों के रूप में निर्मित और उपलब्ध है, जिसके पठन-पाठन से मानव समाज को जीवन जीने की कला और राष्ट्र एवं मानव कल्याण की शिक्षाएं तथा उचित और अनुचित को समझने की योग्यता प्राप्त होती है। इसके लिए आर्य समाज समय-समय पर वैदिक साहित्य का नि:शुल्क वितरण भी करता है। इस सब के पीछे आर्य समाज की केवल एक ही भावना है की संपूर्ण मानवजाति कल्याण के पथ पर अग्रसर हो और भारत सहित विश्व समुदाय अपने कर्तव्य और अकर्तव्य का भेद समझे, सोचे और मानवता का सजग प्रहरी बनकर शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक कार्यो में प्रवर्त हो।

- शेष पृष्ठ 6 पर

महर्षि दयानन्द जी की 200वीं जयंती

के वृहद आयोजनों के लिए भारत सरकार द्वारा प्रधानमंत्री जी की अध्यक्षता में समिति हुई गठित

समिति की विस्तृत सूची अगले अंक में प्रकाशित की जाएगी

आर्य समाज दक्षिण अफ्रीका की ओर से प्रधानमंत्री

श्री नरेन्द्र मोदी जी को बांधी राखी

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से हार्दिक बधाई

संपूर्ण विश्व में आर्य समाज का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। क्योंकि आर्यजन चाहे विश्व के किसी देश में क्यों न रहते हों वे अपने वैदिक सिद्धांत, मान्यता और आदर्श परंपराओं का केवल स्वयं ही निर्वहन नहीं करते अपितु विश्वधरा को भी वेद के पथ पर चलने का संदेश देते हैं। भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी 22 अगस्त 2023 को 15वें ब्रिक्स सम्मेलन में जब दक्षिण अफ्रीका पहुंचे तब आर्य समाज जोहान्सबर्ग, दक्षिण अफ्रीका की प्रधान, श्रीमती आरती नानकचंद शानंद जी ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की कलाई में **'राखी'** बांधी। इस भावनात्मक पर्व पर राखी बांध ने के उपरांत श्रीमती शानंद जी ने पीएम मोदी के विराट व्यक्तित्व और कुशल नेतृत्व की प्रशंसा करते हुए कहा कि श्री मोदी जी मानव समुदाय के लिए पिता जैसा महत्व रखते हैं और अपनेपन की भावना को बढ़ावा देते हैं। उन्होंने **'वसुधैव कुटुंबकम'** के उनके वैश्विक दृष्टिकोण- दुनिया को एक परिवार मानने पर प्रकाश डाला। शानंद जी ने वेदों के अनुरूप मोदी जी की अंतर्दृष्टि की सराहना की और उनके प्रभाव में दक्षिण अफ्रीका में महत्वपूर्ण सकारात्मक परिवर्तनों की आशा भी व्यक्त की। उन्होंने मोदी जी के नेतृत्व में मानव समुदाय की उन्नति और विश्वास को बढ़ाने वाला अनुभव किया, जो पर्याप्त बदलाव लाने की उनकी क्षमता को पहचानता है।

-संपादक

संपादकीय चंद्रयान-3 की सफल, सुरक्षित लैंडिंग भारत

राष्ट्र की महान उपलब्धि एवं ऐतिहासिक कीर्तिमान

आर्य समाज की ओर से इसरो के वैज्ञानिकों एवं समस्त देशवासियों को हार्दिक बधाई

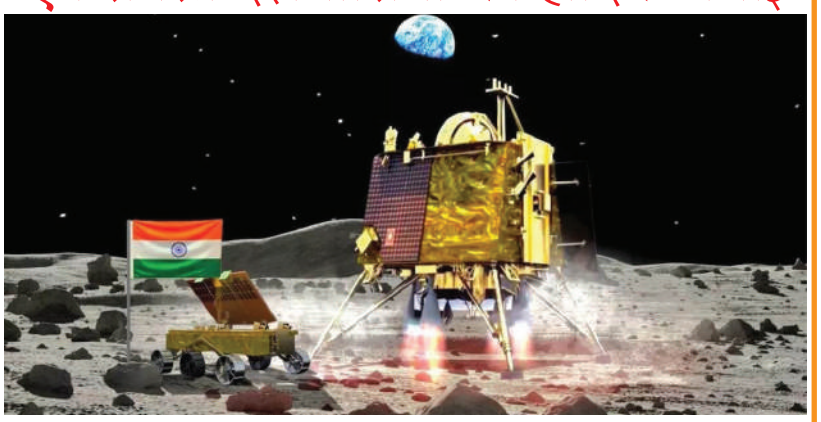

ईश्वर द्वारा निर्मित इस सृष्टि को जितना हम अपनी आंखों से देखते हैं यह केवल उतनी ही नहीं है, बल्कि इस विशाल और विराट अखंड ब्रह्मांड को देखने की शक्ति और सामर्थ्य हम मनुष्यों के पास पर्याप्त नहीं है। क्योंकि जिस पृथ्वी पर हम रहते हैं यह तो केवल एक पृथ्वी मात्र है। इससे आगे दो सौ अरब पृथ्वी हैं,

- शेष पृष्ठ 2 पर

वेदवाणी-संस्कृत

शब्दार्थ- उत्तिष्ठत=उठो, खड़े होओ **अवपश्यत**=और सावधानी से देखो, **इन्द्रस्य**=इन्द्र के **ऋत्वियम्**=ऋतु-ऋतु के अनुकूल, समय-समय पर दिए जाने वाले **भागम्**=हवि के, बलिदान के भाग को देखो। **यदि**=यदि **श्रातम्**=(यह हवि) पक चुकी है तो **जुहोतन**=इसका हवन कर दो और यदि **अश्रातम्**=पकी नहीं है तो **ममत्तन**=(ठहरो, दु:खी मत होओ) प्रसन्न होकर इसे और पकाते जाओ।

विनय- हे मनुष्यो! उठो, देखो कि इस समय इन्द्र की कौन सी आहुति का समय है। यह काल-इन्द्र समय-समय पर संसार से भारी-भारी आहुतियाँ मांगता है और इसी से यह संसार उन्नत होता है। यह देश-इन्द्र समय-समय पर बड़े-बड़े बलिदान चाहता है और इस बलिदान को पाकर ही यह अपने एक बड़े अभ्युत्थान के पग को आगे उठा सकता है और हम

उचित देश काल में बलिदान

उत्तिष्ठताव पश्यतेन्द्रस्य भागमृत्वियम्।
यदि श्रातं जुहोतन यद्यश्रातं ममत्तन॥
-ऋ. 10 । 179 । 1; अथर्व. 7 । 72 । 1
ऋषि:-शिविरौशिनर:॥ देवता-इन्द्र:॥ छन्द:-निचृदनुष्टुप्॥

इस जीवात्मा-इन्द्र के लिए समय-समय पर आत्मबलिदान करते हुए, ऋतु-ऋतु के अनुकूल इसका यजन-हवन करते हुए, बल्कि एक दिन के भी भिन्न-भिन्न समयों पर उस-उस समय के अनुकूल उसको उसके अन्न-ज्ञान आदि की हवि का भाग प्रदान करते हुए चलते हैं, तभी हम आत्मोन्नति कर सकते हैं। इसलिए हमें सदा खड़ा रहना चाहिए, जागते रहना चाहिए और खड़े होकर सावधानी से देखते रहना चाहिए कि कहीं, किसी आहुति का समय तो नहीं आ गया है? कहीं संसार को, देश को या अपने आत्मा को हमारे किसी बलिदान की आवश्यकता तो नहीं आ गई है? देखना, यदि हम प्रमाद के कारण समय को चूक जाएँगे, जिस समय बलिदान करना चाहिए उस समय बलिदान न कर सकेंगे, तो हम न केवल उन्नति से वंचित हो जाएंगे अपितु बहुत पिछड़ जाएंगे, पतित हो जाएंगे, अवनति के गर्त्त में गिर जाएंगे, अत: उठो और देखते रहो कि कहीं इन्द्र का भाग देने की ऋतु तो नहीं आ गई है?

परन्तु आहुति सदा पकी हुई ही देनी चाहिए। कच्ची आहुति से कुछ फल नहीं होता, किन्तु हानि ही होती है। जैसे कि वृक्ष से बिना पके गिरा हुआ फल किसी काम नहीं आता बल्कि खाने वाले को हानि पहुँचाता है, उसी तरह अपने-आपको बिना पकाए जो यूँ ही जोश में आकर बलिदान कर दिया जाता है उससे कुछ नहीं बनता, बल्कि बहुत बार वह आत्मघातरूप होता है, अत: यदि आहुति पकी हुई हो तब तो उसका हवन कर दो, यदि न पकी हो तो ठहर जाओ। इसके लिए दु:खी भी मत होओ। यदि तुम आहुति के समय तक इसे नहीं पका सके तो अब दु:खी होने से क्या लाभ? अब तो प्रसन्न होकर इसे फिर पकाओ, पकाते जाओ जिससे कि अगले आहुतिकाल में तो तुम इसे अवश्य दे सको, अगले बलिदान के समय तुम अवश्य पके हुए होओ।

-:साभार:- वैदिक विनय

वेद-स्वाध्याय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

संपादकीय का शेष भाग

आर्य समाज की ओर से इसरो के वैज्ञानिकों एवं समस्त देशवासियों को हार्दिक बधाई

“ईश्वर की बनाई हुई इस सृष्टि को देखकर आश्चर्य होना स्वाभाविक है किंतु ईश्वर द्वारा प्रदत्त वेद ज्ञान और विज्ञान के माध्यम से शोध करने वाले विज्ञान वेत्ता निरंतर उन्नति-प्रगति और सफलता के पथ पर अग्रसर हो रहे हैं। प्रतिदिन ग्रहों, उपग्रहों पर नयी नयी खोजें की जा रही हैं, नये-नये आविष्कार हो रहे हैं, एक से बढ़कर एक कीर्तिमान स्थापित किए जा रहे हैं। विश्व स्तर पर वैज्ञानिकों के ये कीर्ति स्तंभ प्रशंसनीय तो हैं लेकिन इसके साथ ही यह एक बड़ी प्रतिस्पर्धा का विषय भी सिद्ध हो रहा है। वैज्ञानिकों की इस महत्वपूर्ण प्रतियोगिता के क्षेत्र में भारत राष्ट्र के भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के वैज्ञानिकों के कठोर परिश्रम, पुरुषार्थ एवं संकल्प शक्ति के बल पर 23 अगस्त 2023 दिन बुधवार समय शाम 6:04 बजे 41 दिन लंबी और कठिन यात्रा एवं लैंडिंग प्रक्रिया के बाद अंतत: चंद्रयान-3 मिशन पूरा सफल और सुरक्षित चंद्रमा पर पहुंच गया। उपरोक्त तिथि और समय के साथ ही भारत का नाम उन चार देशों की सूची में सम्मिलित हो गया जिन्होंने चंद्रमा पर पहुंचने में सफलता प्राप्त की है। इस महान ऐतिहासिक उपलब्धि के लिए आर्य समाज की ओर से भारत के महान वैज्ञानिकों एवं देशवासियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।”

इतनी ही आकाश गंगाएं हैं, इतने ही सूर्य हैं और इतने ही चंद्रमा हैं, उनके साथ पूरा सौरमंडल, गृह-नक्षत्र भी विराजमान रहते हैं। यह स्थिति बिल्कुल ऐसी ही होती है कि जैसे आकाश में गेंद फेंकी जाए और वह ऊपर आसमान में गोल-गोल घूमे, इसी तरह से सारे ग्रह नक्षत्र अंतरिक्ष में गोल-गोल घूम रहे हैं। लेकिन ईश्वर ने इन्हें कौन से धागे से बांध रखा है, कोई धागा किसी को कभी दिखाई नहीं देता लेकिन सब अपनी-अपनी कक्षा में घूम रहे हैं।

ईश्वर की बनाई हुई इस सृष्टि को देखकर आश्चर्य होना स्वाभाविक है किंतु ईश्वर द्वारा प्रदत्त वेद ज्ञान और विज्ञान के माध्यम से शोध करने वाले विज्ञान वेत्ता निरंतर उन्नति-प्रगति और सफलता के पथ पर अग्रसर हो रहे हैं। प्रतिदिन ग्रहों, उपग्रहों पर नयी नयी खोजें की जा रही हैं, नये-नये आविष्कार हो रहे हैं, एक से बढ़कर एक कीर्तिमान स्थापित किए जा रहे हैं। विश्व स्तर पर वैज्ञानिकों के ये कीर्ति स्तंभ प्रशंसनीय तो हैं लेकिन इसके साथ ही यह एक बड़ी प्रतिस्पर्धा का विषय भी सिद्ध हो रहा है। वैज्ञानिकों की इस महत्वपूर्ण प्रतियोगिता के क्षेत्र में भारत राष्ट्र के भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के वैज्ञानिकों के कठोर परिश्रम, पुरुषार्थ एवं संकल्प शक्ति के बल पर 23 अगस्त 2023 दिन बुधवार समय शाम 6:04 बजे 41 दिन लंबी और कठिन यात्रा एवं लैंडिंग प्रक्रिया के बाद अंतत: चंद्रयान-3 मिशन पूरा सफल और सुरक्षित चंद्रमा पर पहुंच गया। उपरोक्त तिथि और समय के साथ ही भारत का नाम उन चार देशों की सूची में सम्मिलित हो गया जिन्होंने चंद्रमा पर पहुंचने में सफलता प्राप्त की है। इस महान ऐतिहासिक उपलब्धि के लिए आर्य समाज की ओर से भारत के महान वैज्ञानिकों एवं देशवासियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

इसरो के महत्वाकांक्षी तीसरे चंद्रमा मिशन चंद्रयान-3 के लैंडर माड्यूल (एल.एम.) ने बुधवार शाम चंद्रमा की सतह को चूम कर अंतरिक्ष विज्ञान में सफलता की एक नई परिभाषा लिखी। वैज्ञानिकों के अनुसार इस अभियान के अंतिम चरण में सारी प्रक्रियाएं पूर्व निर्धारित योजनाओं के अनुरूप ठीक वैसे ही पूरी हुईं जैसा तय किया गया था। इस सफलता को केवल इसरो के वैज्ञानिक, भारत के 140 करोड़ लोग ही टी.वी. स्क्रीन पर टकटकी बांधे नहीं देख रहा थे, बल्कि विश्व के कई देशों में भी इसे पल-पल देखा गया। ब्रिक्स सम्मेलन में प्रतिभाग कर रहे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी वर्चुअली इस ऐतिहासिक क्षण के साक्षी बने और सफल लैंडिंग के बाद तिरंगा लहराकर हर्ष व्यक्त किया। इस मिशन पर 600 करोड़ रुपये का खर्च आया है।

अब तक अमेरिका, तत्कालीन सोवियत संघ (रूस) और चीन ने चंद्रमा की सतह पर लैंडर उतारे हैं, लेकिन एक भी देश चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर नहीं पहुंच सका है। रूस का लूना-25 स्पेसक्राफ्ट बीते सप्ताह ही चंद्रमा पर उतरने से पहले क्रैश हो चुका है। रूसी अंतरिक्ष एजेंसी रोसकोसमोस ने सफल लैंडिंग पर भारत को बधाई दी है।

चंद्रयान-3 की लैंडिंग प्रक्रिया के अंतिम 20 मिनट को इसरो ने अत्यंत महत्वपूर्ण समय बताया। शाम 5:44 बजे लैंडर के उतरने की प्रक्रिया आरंभ हुई। इसरो के अधिकारियों के अनुसार चांद की सतह से 6.8 किलोमीटर की दूरी पर पहुंचने पर लैंडर के केवल दो इंजनों का प्रयोग किया और बाकी दो इंजन बंद कर दिए गए। इसका उद्देश्य सतह के और करीब आने के दौरान लैंडर को 'रिवर्स थ्रस्ट' (सामान्य दिशा की विपरीत दिशा में धक्का देना, ताकि लैंडिंग के बाद गति कम की जा सके) देना था। चांद की सतह के करीब पहुंचने के क्रम में लैंडर ने अपने सेंसर और कैमरों का इस्तेमाल कर चांद की सतह की जांच कर सुनिश्चित किया कि कहीं कोई बाधा तो नहीं है।

इसरो के अनुसार सॉफ्ट लैंडिंग के बाद रोवर (प्रज्ञान) अपने एक साइड पैनल का उपयोग करके लैंडर के अंदर से चंद्रमा की सतह पर उतरेगा। चंद्रमा की सतह और आसपास के वातावरण का अध्ययन करने के लिए लैंडर और रोवर के पास एक चंद्र दिवस (पृथ्वी के लगभग 14 दिन के बराबर) का समय होगा। हालांकि, वैज्ञानिकों ने दोनों के एक और चंद्र दिवस तक सक्रिय रहने की संभावनाओं से इन्कार नहीं किया है। चार पहियों वाले लैंडर और छह पहियों वाले रोवर का कुल वजन 1,752 किलोग्राम है। लैंडिंग को सुरक्षित बनाने के लिए लैंडर में कई सेंसर लगाए गए। इनमें एक्सीलरोमीटर, अल्टीमीटर, डाप्लर वेलोसीमीटर, इनक्लिनोमीटर, टचडाउन सेंसर और कैमरे शामिल हैं।

चंद्रमा के ध्रुवीय क्षेत्र पर्यावरण और उनसे होने वाली कठिनाइयों के कारण बहुत अलग भूभाग हैं और इसलिए अभी अज्ञात बने हुए हैं। विज्ञानियों का मानना है कि इस क्षेत्र के हमेशा अंधेरे में रहने वाले स्थानों पर पानी की प्रचुर मात्रा हो सकती है। इसी कारण चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर उतरना बहुत अहम माना जाता है। यहां जमी बर्फ से भविष्य के अभियानों के लिए आक्सीजन, ईंधन और पेयजल मिलने की संभावना भी है।

-संपादक

साप्ताहिक स्वाध्याय

पंडित इंद्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित जीवनी महर्षि दयानंद से क्रमशः साभार

अमृत की तलाश

मठ के महन्त के पास धन था, ऐश्वर्य था, परन्तु न सत्य था, न योग था और न मोक्ष का उपाय था। इस कारण वह जिज्ञासु महर्षि दयानन्द को न बांध सका। ओखीमठ से जोशीमठ होते हुए आप बदरीनारायण गए। आपने सुन रखा था कि बदरीनारायण के आसपास योगी रहा करते हैं। बदरीनारायण को भी योगियों से बिल्कुल शून्य पाकर योग के अभिलाषी महर्षि ने आस-पास की चोटियों और गुफाओं में खोज करने का संकल्प किया। चारों ओर बर्फ पड़ी हुई थी। पहाड़ियों का पानी नुकीले पत्थरों में से होकर बहता हुआ रास्तों को रोक रहा था। महर्षि दयानन्द ने इन कठिनाइयों की पर्वाह न करते हुए खोज जारी रखी।

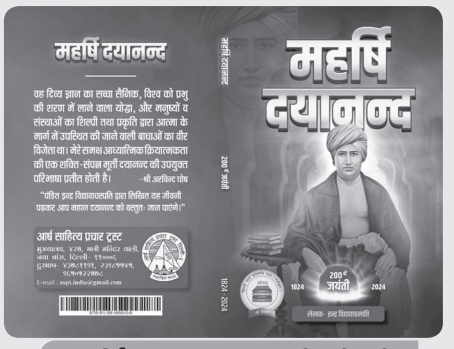

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती पर प्रकाशित

प्रकाशक- आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, सहप्रकाशक- दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, पुस्तक प्राप्ति के लिए vedicprakashan.com ऑनलाइन प्राप्त करें अथवा 9540040339 पर संपर्क करें।

क्रमशः गतांक से आगे

यहां के एक महन्त ने महर्षि जी से बातचीत करके यह संकल्प किया कि उन्हें अपना मुख्य चेला बनाकर उत्तराधिकारी बनाए। ऐसा भव्य और पठित शिष्य उसे कहां मिलता? उसने अपना भाव दयानन्द जी के सामने प्रकाशित किया और यह भी बताया कि मठ के साथ द्रव्य की राशि भी कुछ कम नहीं है। महर्षि दयानन्द ने उत्तर दिया कि 'यदि मुझे धन की अभिलाषा होती तो मैं अपने बाप की सम्पत्ति को, जो तुम्हारे इस माल और दौलत से कहीं बढ़कर थी, न छोड़ता। फिर भी महर्षि दयानन्द ने कहा कि जिस उद्देश्य से मैंने घर छोड़ा और सांसारिक ऐश्वर्य से मुंह मोड़ा, न तुम उसके लिए यत्न कर रहे हो और न तुम्हें उसका ज्ञान है। फिर तुम्हारे पास मेरा रहना किस प्रकार सम्भव है। यह सुनकर महन्त ने पूछा कि वह कौन-सी वस्तु है जिसकी तुम्हें खोज है और तुम इतना परिश्रम कर रहे हो? दयानन्द ने उत्तर दिया कि मैं सत्य योगविद्या और मोक्ष की खोज में हूं और जब तक ये प्राप्त न होंगे, तब तक बराबर देशवासियों की सेवा करता रहूंगा।'

मठ के महन्त के पास धन था, ऐश्वर्य था, परन्तु न सत्य था, न योग था और न मोक्ष का उपाय था। इस कारण वह जिज्ञासु महर्षि दयानन्द को न बांध सका। ओखीमठ से जोशीमठ होते हुए आप बदरीनारायण गए। आपने सुन रखा था कि बदरीनारायण के आसपास योगी रहा करते हैं। बदरीनारायण को भी योगियों से बिल्कुल शून्य पाकर योग के अभिलाषी महर्षि ने आसपास की चोटियों और गुफाओं में खोज करने का संकल्प किया। चारों ओर बर्फ पड़ी हुई थी। पहाड़ियों का पानी नुकीले पत्थरों में से होकर बहता हुआ रास्तों को रोक रहा था। महर्षि दयानन्द ने इन कठिनाइयों की पर्वाह न करते हुए खोज जारी रखी। घूमते-घूमते आप अलकनन्दा नदी के किनारे पहुंचे और उसे पार करने के लिए पानी में घुस गए। इसी नदी में किसी-किसी स्थान पर घुटने तक जल था, और कहीं-कहीं गहराई बहुत अधिक थी। चौड़ाई कोई 10 हाथ के लगभग होगी। पानी बर्फ के समान ठण्डा था और बीच-बीच में नोकदार पत्थर और बर्फ के टुकड़े भी बिखरे हुए थे। शरीर पर कपड़ा बहुत हल्का था और पांव बिल्कुल नंगे थे। महर्षि दयानन्द की दशा बहुत ही शोचनीय हो गई। पानी के अन्दर कुछ समय के लिए तो बिल्कुल मूर्छित-से हो गए, परन्तु धैर्य से अपने-आपको बचाए रखा। किसी प्रकार पार तो हुए, पर एक ओर सर्दी, दूसरी ओर भूख। पांव पत्थरों से छिल गए थे और उनसे लहू बह रहा था। आगे जाने की हिम्मत न रही। परन्तु वहां ठहरकर रात बिताने में भी मृत्यु का सामना था। उस समय परमात्मा की कृपा से भक्त को सहायता मिली। दो पहाड़ी राही ऊपर से आ निकले। वे पहाड़ी यद्यपि महर्षि दयानन्द को साथ न ले जा सके, तो भी कुछ ढाढस बंध गया। थोड़ी देर सुस्ताकर महर्षि जी उठ खड़े हुए और वसुधा तीर्थ पर कुछ विश्राम करके बदरीनारायण को लौट गए।

-क्रमशः अगले अंक में...

स्वास्थ्य संदेश

श्वास सम्बंधी बीमारियां -लक्षण और उपचार

श्वास-प्रणाली के रोगों में प्रमुख रोग दमा (Asthma), वायुनली की सूजन-ब्रांकाइटिस (bronchitis), फेफड़ों की विभिन्न बीमारियां (various diseases of lungs), एलर्जीस (allergies) तथा खांसी (cough) आदि हैं।

श्वसन संस्थान के विभिन्न अंग हैं- नाक (nose), गला (pharyns), स्वरयन्त्र (larynx), श्वासनलिका (trachea), दो श्वास वाहिनियां (two bronchi-right bronchus and left bronchus), श्वास वाहिनियों की उपशाखाएं तथा अति सूक्ष्म शिराएं (bronchioles and smaller air passages), दो फेफड़े (two lungs), तथा फेफड़ों के आवरण (pleura) इत्यादि।

ग्रासेट एण्ड डण्लप, न्यूयार्क (Grosset & Dunlop, New York) द्वारा प्रकाशित dictionary of Symptoms में दमा रोग के लक्षण तथा कारण बताते हुए कहा है:

A condition characterised by wheezing and difficulty in breating. The condition fluctuates-sometimes the sufferer has a very bad attack of wheezing, and at others he is free of symptoms and breathlessness. The condition of runs in families, and is associated with other diseases such as hay fever, allergic rhinitis, eczema, migraine and allergies. The overall name for this group of diseases is atopy. Asthma can be brought on by allergens; and by infections, by emotional and psychological factors, and by non-specific lung irriation such as cold air, cigarette smoke and irritant gases.

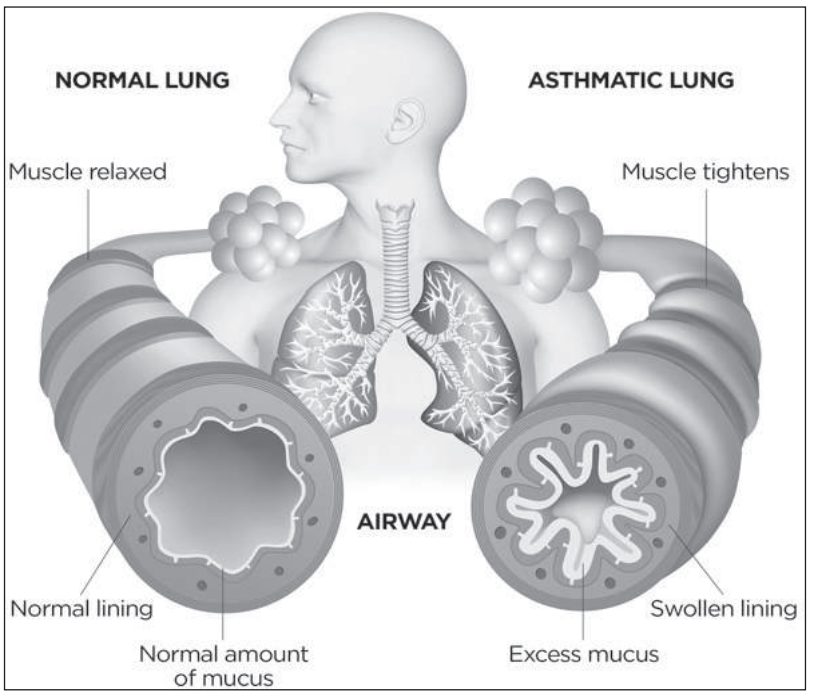

In asthma, the smooth muscle which encircles the bronchi and bronchioles contrats and thus narrows the tubes. This results in wheezing and difficuly in breathing.

These remarks apply to broncial asthma usually referred to simply as asthma. However, there is one other form of asthma, called cardiac asthma, which usually occurs at night in bed in middle-aged or elderly people. It is due to left-sided heart failure.

श्वास नली तथा उसके बाद छोटी-छोटी श्वास नलियों द्वारा हवा फेफड़ों में पहुंचती है। श्वास नलियों के छिद्र जब सिकुड़ जाते हैं तब श्लेष्मा भर जाने के कारण ये बन्द हो जाते हैं। इससे प्राण वायु का फेफड़ों तक नियमित रूप से नहीं पहुंचती है। श्वास नलियों की यही असुविधाजनक स्थिति दमा कहलाती है।

सभी प्रकार के दमा में श्वास नली भी कमजोर और दोषमुक्त हो जाती है। आमतौर पर दमा हलकी सी सर्दी लगने पर शुरू होता है। सांस लेने में कठिनाई प्रतीत होने लगती है। दौरा पड़ने पर रोगी हांफने लगता है। छाती में प्रश्वास का शब्द सुनाई देने लगता है। दमे के दौर प्रायः सर्दी के मौसम में, किसी को गर्मी में तथा किसी को बरसात में पड़ते हैं।

रोग पुराना होने पर कई रोगियों को यह अधिक भोजन खाने, काफी गुस्सा करने, कब्ज, खांसी तथा हिचकी के साथ शुरू हो जाता है। रक्त का दूषित होना भी इस रोग का कारण हो सकता है। जब दूषित रक्त श्वास नलियों में पहुंचता है तो उनके सिकुड़न पैदा करता है। सिकुड़न होने से श्वास लेने में कठिनाई आती है। रक्त मुख्य रूप से गलत खाने-पीने के कारण दूषित होता है।

-क्रमशः अगले अंक में...

आर्य समाज द्वारा 77 वें स्वाधीनता दिवस पर देश-विदेश में विभिन्न कार्यक्रम संपन्न

यह सर्वविदित ही है कि भारत राष्ट्र के 77वें स्वाधीनता दिवस पर संयोजक द्वारा लालकिले की प्राचीर से आर्य समाज दीवान हाल चांदनी चौक का नाम सम्मान पूर्वक लिया गया और स्वयं माननीय प्रधानमंत्री जी ने महर्षि दयानंद सरस्वती जी को स्मरण किया। वस्तुतः आर्य समाज राष्ट्रभक्ति और मानव सेवा को सदैव सर्वोपरि मानता आया है। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद की प्रेरणा के प्रताप से ही देश की स्वतंत्रता के लिए लाखों अमर शहीदों ने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया था। महर्षि ने ही सर्वप्रथम स्वराज्य का उद्घोष किया था। यहां प्रस्तुत हैं 77वें स्वाधीनता दिवस पर देश-विदेश के संक्षिप्त समाचार एवं झलकियां

आर्य गुरुकुल गयाना में महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 30 फुट की प्रेरक प्रतिमा का अनावरण कार्यक्रम संपन्न

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती को लेकर भारत सहित संपूर्ण विश्व में अत्यंत उत्साह का वातावरण बना हुआ है। चारों ओर बड़े-बड़े प्रेरणादाई आयोजनों का क्रम चल रहा है। वेदों की प्रचार-प्रसार के कार्यक्रम अपार सफलताओं के साथ संपन्न हो रहे हैं। वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों को जन-जन तक पहुंचाया जा रहा है। महर्षि की कल्याणकारी शिक्षाओं को अपनाकर लोग सुख शांति की राह पर आगे बढ़ रहे हैं।

इस वृहद अनुक्रम में आर्य समाज के गुरुकुल, गयाना के प्रांगण में महर्षि दयानंद सरस्वती जी महाराज की 30 फीट ऊंची प्रेरक प्रतिमा लगाने का ऐतिहासिक कीर्तिमान बनाया गया। इस अवसर पर वहां के आर्य नर, नारी, बच्चे और युवा भारी संख्या में उपस्थित रहे। ईश्वर भक्ति और महर्षि दयानंद सरस्वती की महिमा पर आधारित भजन लगातार चलते रहे। बीच-बीच में आर्य समाज और महर्षि की जय जयकार होती रही। आर्य गुरुकुल, गयाना तथा इस संपूर्ण रचनात्मक कार्य के लिए वहां सभी विशिष्ट आर्यजनों सहित इस सबके सूत्रधार डॉ. सतीश प्रकाश जी को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

आर्य समाज (वैदिक मिशन) वेस्ट मिडलैंड्स (बर्मिंघम) यूके द्वारा हर्षोल्लास से मनाया गया 77वां स्वतंत्रता दिवस समारोह

राष्ट्र एवं मानव सेवा को समर्पित आर्य समाज हमेशा से राष्ट्रीय पर्वों को अत्यंत उत्साह पूर्वक मनाता आया है। इसके लिए आर्य जन न ही देश की परिधि और न ही कोई सीमा को मानते हुए जो जहां, जिस भी देश में रहता है वहीं से अपना राष्ट्र प्रेम और मानव सेवा को प्रदर्शित करता है।

20 अगस्त 2023 को आर्य समाज (वैदिक मिशन) वेस्ट मिडलैंड्स यूके (बर्मिंघम) द्वारा भारत राष्ट्र का 77वां स्वाधीनता दिवस समारोह अत्यंत भक्ति भाव से मनाया गया। सर्वप्रथम राष्ट्र की सुख समृद्धि के लिए हवन किया गया। जिसमें 200 से अधिक स्त्री, पुरुषों, बच्चों और युवाओं ने विश्व कल्याण के लिए आहुति दी और ईश्वर से प्रार्थना की। इसके बाद सभी ने तिरंगा ध्वज हाथ में लेकर भारत माता की जय, वंदे मातरम, आर्य समाज अमर रहे, महर्षि दयानंद सरस्वती की जय, अमर शहीद बलिदानियों की जय-जय कार करते हुए भव्य तिरंगा-यात्रा निकाली गई।

इस तिरंगा यात्रा में 1 वर्ष से लेकर 90 वर्ष तक के बच्चे, युवा, बुजुर्ग, महिलाएं और पुरुष शामिल हुए। पूरे कार्यक्रम का आकर्षण देशभक्ति के गीत, बच्चों और उनकी माताओं द्वारा सांस्कृतिक नृत्य आदि रहा। ब्रिटिश शासन से भारतवर्ष की आजादी में आर्य समाज के योगदान पर श्री कृष्ण चोपड़ा द्वारा भाषण दिया गया जो अपने आप में बहुत ही प्रेरणादायक सिद्ध हुआ। आचार्य डॉ. उमेश यादव, डॉ. मोना खुरमा, श्री विजय कुमार, डॉ. उमेश कथूरिया, श्री परिमल सोमानी, श्री विजय गुलाटी और सुश्री बिमला सौंद ऐसे योग्य ट्रस्टी हैं, जिन्होंने इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए बहुत कुछ सुझाव और सहयोग भी प्रदान किया। अध्यक्ष श्री रेनुकुंटा छुट्टियों में भारत गए हुए थे, लेकिन उनकी सभी जिम्मेदारियां सचिव डॉ. मोना खुरमा जी ने संभाली थीं। कौंसल, चांसरी के प्रमुख श्री अमन बंसल कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे और पुलिस विभाग से श्री रमेश शर्मा विशेष अतिथि थे। हालांकि इस कार्यक्रम में करीब 250 लोग पहुंचे और सभी लोग देशभक्ति के रंग में सराबोर हो गए थे, इस कार्यक्रम में कई समुदायों, मंदिरों और संगठनों के सदस्यों ने भाग लिया, सभी के प्रति आर्य समाज की ओर से आभार व्यक्त किया गया।

-आचार्य डॉ. उमेश यादव, धर्मस्व मंत्री

एक शाम शहीदों के नाम भव्य कार्यक्रम संपन्न

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आर्य समाज दीवान हाल चांदनी चौक की शाखा आर्य समाज मोर सराय के प्रांगण में 17 अगस्त 2023 को एक शाम शहीदों के नाम भव्य कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस अवसर पर सभा के संवधकों ने अमर शहीदों को देशभक्ति के गीतों से भावपूर्ण तरीके से स्मरण किया। कार्यक्रम का संचालन श्री बृहस्पति आर्य, महामंत्री, आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश ने किया। आपने उपस्थित महानुभावों को संबोधित करते हुए कहा कि देश की आजादी में आर्य समाज की भूमिका सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण थी। महर्षि दयानंद सरस्वती और आर्य समाज की प्रेरणा से ही वाला लाजपतराय , लाला हरदयाल, स्वामी श्रद्धानंद, श्याम जी कृष्ण वर्मा, भाई परमानन्द, करतार सिंह सराभा, सरदार ऊधम सिंह, पंडित रामप्रसाद बिस्मिल, सरदार भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव, चंद्रशेखर आजाद, सुभाष चन्द्र बोस और अनेक अन्य अमर वीर बलिदानियों ने हंसते हंसते अपने प्राण न्यौछावर कर दिए थे। आप देश की वर्तमान स्थिति से अवगत भी और देश की आजादी की सुरक्षा के प्रति सजग रहने का संदेश भी दिया।

इस अवसर पर आर्य समाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री अंकित उपाध्याय ने मधुर और सारगर्भित देशभक्ति के भजन प्रस्तुत किए। परिणाम स्वरूप संपूर्ण वातावरण राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत है गया। कार्यक्रम में हर आयु वर्ग के आर्यजन उपस्थित थे। सभा के संवर्धकों ने संपूर्ण व्यवस्था को सुंदर और सुदृढ़ स्वरुप प्रदान किया।

श्रावणी पर्व की वैदिक परंपरा, महत्व और शिक्षाएं

- **श्रावणी पर्व पर हम आर्यजन अपने-अपने घरों में, आर्य समाजों और शिक्षण संस्थानों में सात दिवसीय विशेष यज्ञ, दैनिक योग, दैनिक स्वाध्याय, साप्ताहिक सत्संग, मानव सेवा का संकल्प लें।**
- **अपने बच्चे-बच्चियों का उपनयन-यज्ञोपवीत संस्कार कराएं, अपने यज्ञोपवीत बदलें, नए यज्ञोपवीत धारण करें। यज्ञोपवीत के तीन धागे-सूत्रों का संदेश-उपदेश-आदेश श्रवण करें, सोचें, समझें और अमल करें। देव ऋण, ऋषि ऋण और पितृ ऋण से उऋण होने के लिए संकल्प के अनुसार पुरुषार्थ करें।**
- **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वैदिक प्रकाशन से आनलाइन वेद, महर्षि दयानन्द की हिन्दी और अंग्रेजी जीवनी, सत्यार्थ प्रकाश और आर्य समाज का इतिहास, बच्चों के लिए महापुरुषों के जीवन पर आधारित कॉमिक्स और अनेक अन्य आर्ष साहित्य मंगवाकर उनका स्वाध्याय करें। ऑनलाइन पुस्तकें मंगाने के लिए vedicprakashan.com पर लॉगइन करें अथवा 9540040339 पर सम्पर्क करें।**

हैदराबाद आंदोलन के अमर शहीदों को याद रखना हमारा परम कर्तव्य

हमारी भरतीय वैदिक संस्कृति में श्रावणी पर्व का बड़ा महत्व है। यह पर्व वर्षा के मौसम में आता है। प्राचीन समय में हमारे पूर्वज अपने कर्तव्यों को परिपूर्ण करके वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम का विधिवत पालन करते हुए तपोवनों आश्रमों में साधना पूर्ण जीवन जीते थे। जब चौमासा अर्थात बरसात का मौसम आता था तो वे वनों में सर्प आदि जहरीले जीव-जंतु, कीट पतंगों की अधिकता होने के कारण नगरों की और आते थे। इस मासैम में बरसात ज्यादा होने के कारण कृषि, व्यापार और अन्य सभी विशेष कार्यों पर लगभग विराम लग जाता था। वह विराम ऐसा नहीं होता था जैसे कोरोना काल में लॉकडाउन हुआ था, उस समय वर्षा भी इससे कहीं अधिक होती थी और आवागमन के साधन भी अपेक्षाकृत कम ही होते थे। अत: बरसात के इन दिनो का विशेष महत्व होता था। वानप्रस्थी और संन्यासी वृंदों के सान्निध्य में बड़े-बड़े यज्ञों और सत्संगों का आयोजन होता था। सभी आयुवर्ग के लोग इसमें भाग लेते थे। सारे समाज में एक उत्सव जैसा वातावरण बन जाता था। वानप्रस्थी और संन्यासी लोग अपनी अनुभूत की हुई ज्ञान राशि का सहर्ष वितरण करते थे और बच्चे युवा स्त्री-पुरुष सब मिलजुलकर उनके उपदेश, संदेश और कल्याणकारी आदेशों के अनुरूप वेद उपनिषद आदि ग्रंथों का स्वाध्याय किया करते थे। यह पर्व इसलिए भी महत्वपूर्ण माना जाता था क्योंकि इसमें घर के बड़े-बुजुर्ग अपने बच्चों के छोटे बच्चों को कहानियों के माध्यम से वीरत धीरता के ऐतिहासिक तथ्यों से अवगत कराते थे।

श्रावण में सुनने का महत्व

श्रावण और श्रवण दोनों शब्दों में केवल आ की मात्रा का अंतर है। साधरणतया श्रावण को बोलचाल की भाषा में सावन कहा जाता है। वस्तुत: श्रावण का मतलब श्रवण करने से जोड़कर देखा जाता है। मतलब श्रावण मास में हम सुनने वाले बनें, ध्यान पूर्वक सुनें- **'भद्रं कर्णेभि: श्रणुयाम देवा:'** अपने कानों से अच्छा सुनें, कल्याणकारी वेदोक्त वचनों को सुनें। जीवन में सुनना भी अवश्य आना चाहिए, लेकिन क्या सुनें क्या न सुनें यह भी हमें पता होना चाहिए। श्रावण में श्रवण करने का सबसे बड़ा यही संदेश है। हमें ईश्वर की वाणी को सुनना चाहिए, और केवल सुनना ही नहीं चाहिए उसे गुनना भी चाहिए, उस पर चिंतन मनन भी करना चाहिए, इससे भी आगे उस पर अमल भी करना चाहिए इन दिनों में विशेष रूप से वेदों के परायण यज्ञों के साथ सत्संगों के आयोजन पहले भी होते थे और आर्य समाजों द्वारा आज भी होते हैं। आजकल सबसे बड़ी समस्या यही है कि व्यक्ति सुनना नहीं चाहता केवल सुनाना चाहता है, अगर कोई काम की बात हो तब भी आदमी यही कहता है कि बस करिए मुझे पता है, छोटे बच्चे तो यहां तक कह देते हैं कि भाषण नहीं देना, जैसे माता पिता कुछ कहने की कोशिश करते हैं तो बच्चे कहने लगते हैं कि हो गए शुरू भाषण देने के लिए, बस हमें नहीं सुनना क्योंकि अधिकांशतया समाज में सबकी बुद्धि पर अहंकार सवार हो गया है, सब केवल सुनाना चाहते हैं सुनना कोई नहीं चाहता। श्रावण मास में हम यह अवश्य सोचें कि जो वेदादि शास्त्रों को सुनेगा, सोचेगा, विचार करेगा, चिंतन मनन करेगा, और उन पर अमल करेगा वही कल्याण के मार्ग पर आगे बढ़ेगा।

श्रावणी पर्व पर यज्ञों का आयोजन

श्रावणी पर्व पर जहां एक तरफ वेदादि शास्त्रों के पढ़ने-पढ़ाने और सुमने सुनाने का महत्व माना गया है वहीं दूसरी और वेदों के वृहद यज्ञों के विशेष आयोजन करने का विधान है। असल में प्राचीन काल में यज्ञ और सत्संगों के आयोजनों पर विशेष मेलों की तरह भीड़ जुटती थी, उस समय राजा और प्रजा गुरु और शिष्य, पति पत्नी, सभी लोग अपनी सामर्थ्यानुसार उत्तम श्रेष्ठ कार्यों के प्रचार में अपना योगदान भी देते थे और हर्षोल्लास से सेवा भी करते थे। इसीलिए उस समय सारा वातावरण शुद्ध और पवित्र रहता था। लगभग सभी मनुष्य स्वस्थ और प्रसन्न रहते थे, धन-धान्य की अभिवृद्धि रहती थी। श्रावण मास में किए जाने वाले यज्ञों में विशेष रूप से ऋतु के अनुकूल सामग्री प्रयोग की जाती थी, वर्षा ऋतु में जो अनेकानेक जीवाणु-विषाणु पनपते हैं उनसे मानव समाज की भी रक्षा हेतु विशेष औषधीय सामग्री प्रयोग करने का ही विधान है। यज्ञ का जितना आध्यात्मिक लाभ होता है उससे कहीं अधिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी लाभ होता है। यज्ञ हमारे आस-पास के सारे विषैले वातावरण को शुद्ध करके हमें उत्तम जलवायु प्रदान करते हैं, यज्ञ अपने आप में एक विज्ञान है। यज्ञ में डाला हुआ हर पदार्थ सूक्ष्म होकर वायु में मिल जाता है और वह चाहे कोई मित्र हो या अमित्र, अपना हो या पराया हो, यज्ञ करता हो या न करता हो, आपके प्रति अच्छी भावना रखता हो या द्वेष रखता हो, सबको बराबर मात्रा में प्राप्त होता है। इसलिए यज्ञ को परोपकार का सबसे बड़ा महान कार्य माना गया है। श्रावणी पर आर्य समाज द्वारा लगातार विशेष यज्ञों का आयोजन करना एक महान परंपरा रही है।

श्रावणी और यज्ञोपवीत

श्रावणी पर यज्ञोपवीत धारण करना हमारी प्राचीन परंपरा है। इस अवसर पर पुराने यज्ञोपवीत बदलकर नए यज्ञोपवीत धारण करने का भी विधान है। यज्ञोपवीत हमारे लिए कर्तव्य परायणता की प्रेरणा का प्रतीक चिन्ह है। यज्ञोपवीत के संबंध में यह स्पष्ट रूप से कहा जाता है कि यह हमारा व्रत सूत्र है, यह विद्या का चिन्ह है, यह हमें मानवीय कर्तव्यों का स्मरण कराता है, जैसे पुलिस और सेना के प्रत्येक छोटे-बड़े व्यक्ति के पद और प्रतिष्ठा का सूचक उसकी पोशाक में लगा हुआ चिन्ह होता है, जैसे किसी भी विशेष सरकारी कार्यक्रम में

- शेष पृष्ठ 7 पर

आइए, गुरुकुल के बच्चों के साथ पर्व मनाएं

सदा से पर्व प्रिय वैदिक संस्कृति में प्रत्येक पर्व को भावनात्मक रूप से मनाने की परंपरा रही है। रक्षाबंधन के अवसर पर हम यह अवश्य विचार करें कि आर्य समाज द्वारा संचालित गुरुकुल, कन्या गुरुकुल एवं अन्य अनेक संस्थाएं जहां पर दूरदराज के क्षेत्रों से आए हुए बच्चे शिक्षा प्राप्त कर अपने जीवन का निर्माण कर रहे हैं। ऐसे में हम सबका दायित्व बनता है कि दिल्ली में चल रहे आवासीय गुरुकुलों में जो बच्चे अपने माता पिताओं और परिवार से अलग रहकर शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, हम उनके बीच में जाकर पर्व मनाने का प्रयास करें। हम उन बच्चों को भी राखी बांधे और बच्चियों से राखी बंधवाएं, उनको मिठाई खिलाएं और आशीर्वाद दें। जिससे उनको भी ऐसा लगे कि आर्य समाज परिवार बहुत बड़ा परिवार है और यहां पर सब मिल जुलकर पर्व मनाते हैं। इस प्रकार वैदिक पर्वों की गरिमा बढ़ेगी और समाज को नई प्रेरणा मिलेगी।

Taking Bath in the Source of Knowledge

Continuing the last issue

Principle of action and reaction is applicable all around the world. When water is flowing in some direction and some big rocks come in its way, water changes its direction and flows in the opposite direction. The speed of water in the opposite direction is directly proportional to the speed in original direction. Dandiji also felt a strong hit in the flow of his thinking. He was considering system of Kaumudi, Manorma and Shekhar as the best system. But after listening to the original system of Ashtachyai he felt the beauty of system in it, so he realised the beauty in it and in a way it opened his eyes meaning thereby that he was astonished and pleased. He started feeling that system given by Rishi was superior to the system of Kaumudi. He ws thinking as to why the so superior system was lost. He felt that Bhatto ji Dixit gave Sidhant Kaumudi and drew back the other system far away. As love and respect for Ashtadhyai and Mahabhshya increased in his mind, hatred for Bhatto ji Dixit grew proportionally in his mind.

With the passage of time he made up his mind that wihotut stopping the advertising of Kaumudi and other books relating to it, system of Vyakaran given by Rishi can not achieve its respectable place. This view struck hard in Dandiji's mind and heart He thought about all this in day time and dreamt about the same at nights. Once Raja Ram Singh invited Dandiji into his Darbar and asked for some way to be successful. Dandiji, who was devotee of books written by Rishi, ordered him to call a big gathering of wise persons throughout the country and have their meeting. The topic of discussion (debate) should be "Which of the two, that is, systems of Vyakaran given by Rishi and that of Kaumudi is better?" Dandiji assured the King that he would surely prove that the system given by Rishi is better where as there are so many mistakes in Kaumudi and other books. On another occasion, Collector of Mathura, Mr. Postlee, came to see Dandiji. He asked Dandiji respectfully "Please tell me what I can do for you". Dandiji answered, "If you really want to fulfill my desire, :Arrange to collect all the books written by Bhattoji' Dixit and burn them completely". It is also well known that Dandiji asked their students to touch the books written by Dixit with their shoes.

Was that action proper? Having independent views about Ashtadhyai or Kaumidi is quite correct. It was his right. Wise persons have right to have independent views about any book. They have full right to have independent view about uses and draw backs of any book, we can't say that his views are quite wrong. Panini Muni had given system of Ashtadhyai. Order of sutras is its life. It we ignore the order of the sutras, the sutras are meaning less (invain). Correctness of sutras of Ashtadhyai depends upon the order of Sutras, Its beauty and pride depend upon the order of Sutras, If we ignore the order and use the Sutras only, we have to burden the memory power. It can be declared that the person, who wants to become expert in Sanskrit Vyakran, and go through 'Sidhant Kaumudi completely from beginning to end, he can not succeed without knowing order of the sutras. There is a strong relationship between Ashtadhyai and order of its sutras.

To be continued in next issue

आगरा के दो रेलवे स्टेशनों पर वैदिक साहित्य के स्टालों का शुभारंभ

पृष्ठ 1 का शेष

इसी महत्वपूर्ण भावना और कामना को साकार करते हुए महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती एवं आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस के दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा जो काफी लंबे समय से प्रयास किया जा रहा था कि भारत के रेलवे स्टेशनों पर वैदिक साहित्य के स्टाल स्थापित किए जाएं, आर्य समाज की मान्यता और परंपराओं को जन-जन तक पहुंचाया जाए, महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाया जाए, इसके लिए भारतीय रेलवे की ओर से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को 10 रेलवे स्टेशनों पर वैदिक साहित्य के स्टाल स्थापित करने की अनुमति प्राप्त हुई है। जिसमें से 20 अगस्त 2023 को उत्तर प्रदेश के आगरा कैंट एवं आगरा फोर्ट रेलवे स्टेशनों के प्लेटफार्म नंबर दो और तीन पर वैदिक साहित्य के स्टाल स्थापित कर विधिवत उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान, श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी, अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के महामंत्री, श्री जोगेंद्र खट्टर जी, पश्चिम में दिल्ली वेद प्रचार मंडल के प्रधान, श्री सुरेंद्र आर्य जी, आर्य समाज सेक्टर-16 रोहिणी के प्रधान श्री प्रदीप आर्य जी, दिल्ली सभा के मंत्री श्री सुखबीर सिंह आर्य जी, आर्य केंद्रीय सभा के महामंत्री, श्री सतीश चड्ढा जी, मंत्री डॉ. मुकेश आर्य जी, आर्य समाज सी-3 से श्री अजय तनेजा जी, रघुमल आर्य कन्या सीनियर सेकेंडरी पब्लिक स्कूल के चेयरमैन, श्री संजय आर्य जी, आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश के महामंत्री, श्री बृहस्पति आर्य जी, श्री दिनेश शास्त्री जी, श्री धर्मवीर जी, श्री मनोज आर्य जी, श्री गौरव आर्य जी, श्री सुरेश कामती जी, श्री विजय आर्य जी, श्रीमती आरती खट्टर जी, श्रीमती रश्मि वर्मा जी, श्रीमती किरण चड्ढा जी तथा दिल्ली के अनेक अन्य गणमान्य महानुभाव उपस्थित रहे। आगरा क्षेत्र के विभिन्न आर्य समाजों के अधिकारी कार्यकर्ता और सदस्यों में श्री रमन वासन जी, श्री सुरेश चंद्र गर्ग जी, श्री पूरन डाबर जी, श्री रमाकांत सारस्वत जी, श्री अजय महोत्रा जी, श्रीमती शशि चोपड़ा जी, श्री अजय चोपड़ा जी, प्रस्तुति श्रीवास्तव जी, खंडेलवाल जी, श्री अरविंद मेहता जी, श्री विजय अग्रवाल जी, श्रीराम प्रकाश गुप्ता जी एवं अन्य अनेक महानुभावों की गरिमामय उपस्थिति में वैदिक साहित्य के स्टालों का उद्घाटन हुआ और इसको लेकर सभी आर्यजनों में काफी उमंग, उत्साह और उल्लास दिखा। इस अवसर पर ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना मंत्रों का पाठ किया गया, गायत्री मंत्र का उच्चारण करते हुए दीप प्रज्वलन किया गया और सभी महानुभावों ने महर्षि दयानंद सरस्वती का जय जयकार किया, आर्य समाज अमर रहे, ओम का झंडा ऊंचा रहे, वेद की ज्योति जलती रहे के जयघोष लगाए। **-सतीश चड्ढा**

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज सुन्दर विहार का चुनाव संपन्न

प्रधान : श्री राजेन्द्र पाल सिंह वर्मा
मंत्री : श्री अमर नाथ बत्रा
कोषाध्यक्ष : श्री प्रहलाद सिंह आर्य
कार्यकारी मंत्री : श्री संजीव आर्य

प्रेरक प्रसंग

ऋषि-जीवन पर नई सामग्री जब ऋषिराज हुगली पधारे

महर्षि दयानन्द 1930 विक्रमी तदनुसार 1 अप्रैल 1873 ई. के दिन हुगली पधारे। पण्डित लेखरामजी व श्री देवेन्द्रबाबू ने अपने ग्रन्थ में बंगभूमि की ऋषि की यात्रओं का प्रामाणिक विवरण दिया है। अभी-अभी हमें कलकत्ता के एक पूर्व न्यायधीश स्वर्गीय श्री मोहनदत्त के ऋषिजी के हुगली-यात्र के संस्मरण मिले हैं। इनमें से कुछ प्रेरक प्रसंग हम यहाँ देते हैं। यह सामग्री किसी भी जीवन चरित्र में नहीं मिलती। हाँ! ऋषि के बड़े-बड़े सब जीवन-चिरत्र में दी गई घटनाओं की पुष्टि श्रीदत्त के संस्मरणें से होती है।

श्रीदत्त ने अपने लेख में लिखा है कि ऋषिजी नवम्बर 1872 ई. को हुगली पहुँचे। यह श्रीदत्त ने ठीक नहीं लिखा। ऐसा अनजाने से लिखा गया है। यह स्मृति का दोष है। आपने लिखा है कि ऋषिवर एक मन्दिर के ऊँचे चबूतरे पर विराजमान थे। मन्दिर की सीढ़ियाँ नीचे भागीरथी में समाप्त होती थीं। श्रीदत्त दो मित्रों सहित सायंकाल उधर भ्रमण के लिए निकले। वहाँ क्या देखते हैं कि चबूतरे के समीप लोगों की भारी भीड़ है।

''जो कुछ हमने देखा, उससे हम पर भी कुछ समय के लिए एक जादू का सा प्रभाव पड़ा।'' जब कुछ अधिक अँधेरा हुआ तो भीड़ कुछ घटने लगी तथापि हम चबूतरे के समीप मन्दिर के एक कोने में खड़े रहे। महर्षि की दृष्टि हम तीनों युवकों पर पड़ी। उन्होंने संकेत करके हमें अपने पास बुलाया। हम तीनों मित्र उनके निकट गए। कुछ समय के लिए जिह्वा ने साथ न दिया। बोलने की शक्ति लुप्त हो गई मानों कि हम गूँगे हो गए हैं।

''अन्त में हममे से एक ने, जो सबसे अधिक चतुर और बड़ा चंचल था, बड़े व्यंग्य से ऋषिजी को हितोपदेश से संस्कृत का एक वचन सुनाया। ऋषि इसे सुनकर मुस्काए और खिले माथे उस तरुण का हाथ पकड़कर अपने समीप बिठाया।

इससे पता चलता है कि उस महात्मा का हृदय कितना सहानुभूति पूर्ण, उदार व विशाल था। वे चरित्र पर उपदेश देने लगे। उनकी शैली ऐसी अद्वितीय, दिल को छूने वाली, इतनी सुमधुर व प्रभावशाली थी कि हमारे मित्र की सब कटुता व अभिमान एकदम नष्ट हो गया। ज्ञान का अभिमान व पूछने वाली भावना का लोप हो गया। हृदय ऐसा पिघला कि ऋषि की पवित्र चरणधूलि को सिर पर लगा लिया। इस प्रकार ऋषिजी से हमारी जान-पहचान हुई।

-प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

पृष्ठ 5 का शेष

व्यक्ति की योग्यता और पद प्रतिष्ठया के अनुसार उसके बैठने की व्यवस्था होती है और उस परंपरा का उल्लंघन भी आपत्तिजनक माना जाता है। उसी प्रकार यज्ञोपवीत के तीन तार प्रतीक होते हुए भी मानव जीवन में बहुत महत्व रखते हैं। जैसे बिना वर्दी के किसी सेना व पुलिस अधिकारी का कोई वैधानिक अधिकार में महत्व नहीं होता, उसी प्रकार मानव जीवन में यज्ञोपवीत धारण करे बिना हमारा कोई सही उददेश्य और आधार नहीं होता। हमारे आचरण और व्यवहार को सही दिशा मिले, हम अपने कर्तव्य पथ पर अडिग होकर चलें, हमारी प्रतिष्ठा बढ़े और हम कर्तव्य पालन के लिए प्रेरणा प्राप्त करते रहें इसके लिए हमें व्रत सूत्र मतलब यज्ञोपवीत पहनना ही चाहिए। यह हमें आलस्य और प्रमाद से भी बचने की प्रेरणा देता है। इस सूत्र को पिता-पुत्र, गुरु-शिष्य, पति-पत्नी सबको धारण करना चाहिए। कुछ लोग पत्नी के स्थान पर पति 6 तार का यज्ञोपवीत धारण कर लेते हैं, जबकि ऐसा कोई शास्त्रीय विधान नहीं है। यह केवल अंधविश्वास है, कभी भी पत्नी का भोजन पति नहीं करता, पत्नी की बजाए पति व्यायाम करके स्वस्थ नहीं होता, सबका अपना-अपना आत्मा है, अपना अपना शरीर है, अपने अपने कर्तव्य हैं और अपनी-अपनी शक्ति है, सामर्थ्य है, सबके कर्तव्य और कर्म भी अपने-अपने अलग है, फिर कोई पुरुष कैसे अपनी पत्नी के नाम का यज्ञोपवीत पहन सकता है? इसलिए सबको अपना यज्ञोपवीत धारण करना चाहिए और श्रावणी उपाकर्म के अवसर पर यज्ञोपवीत बदलना भी चाहिए।

यज्ञोपवीत की रक्षा हेतु आर्य समाजियों का बलिदान

आर्य समाज के इतिहास में क्रांतिवीर श्री रामरखामल को हमें नमन करना चाहिए, जिन्होंने अपने यज्ञोपवीत की रक्षा के लिए अपने प्राणों का बलिदान कर दिया था। काले पानी के राज बंदियों को क्रांतिकारियों को जेल के नियम के अनुसार यज्ञोपवीत उतारना पड़ता था। ऐसा ईसाई शासकों ने अनिवार्य कर रखा था। वीर रामरखामल नाम के एक आर्य क्रांतिकारी को भी आज्ञा दी गई, उसने ऐसा करने से इंकार कर दिया, अन्याई जेल अधिकारियों ने पाषाण हृदय विधर्मी अपराधियों ने उसको उसका व्रत सूत्र उतारने को कहा और जब उसने नहीं उतारा तो उन्होंने क्षण भर में उसे खंडित कर दिया। वीर रामरखामल ने भूख हड़ताल करके अपने प्राण दे दिए, लेकिन बिना यज्ञोपवीत के अन्न ग्रहण न करने का व्रत लेकर उसने इस व्रतसूत्र के लिए, धर्म के लिए अपना बलिदान कर दिया। यह बात उस समय की है जब स्वातंत्रय वीर सावरकर भी अंडमान की जेल में बंदी थे।

यज्ञोपवीत और हैदराबाद का आर्य सत्याग्रह

सन 1939 के हैदराबाद के आर्य सत्याग्रह में भी यज्ञोपवीत की महिमा और गौरव की अपनी ही गाथा है। आर्य सत्याग्रह से पूर्व निजाम उस्मान ने डींग मारते हुए एक गजल में लिखा था-

बंद नाकूस हुआ,
सुनके नकाय तकबीर।
जलजला आ ही गया,
सिसले जिन्नार पै भी॥

अर्थात मस्जिदों में अल्लाह हू अकबर की आवाज सुनकर हिंदुओं के दिल दहल गए। मंदिर के शंख बंद हो गए। इनके भयभीत होने से शरीर कांपने लगे और शरीर पर लिपटे यज्ञोपवीत पर भी भूकंप-सा आ गया। उस समय पंडित गंगा प्रसाद जी उपाध्याय ने यज्ञोपवीत के लिए अपनी कविता में लिखा था-

तीन धागे से फकत,
सूत के कच्चे लेकिन।
बाजी जुन्नार ने ली,
हैदरी तलवार पै भी॥

हजारों आर्यवीरों ने धर्म की रक्षा के लिए जेल जाकर, कई एक लोगों ने बलिदान देकर यज्ञोपवीत के तीन भाग की प्रेरणा से ऐसा शक्ति और साहस से चमत्कार कर दिखाया कि संसार देखता ही रह गया। इन्हीं सूत के तीन धागों ने हैदरी तलवार पर ऐतिहासिक विजय प्राप्त करके उस्मान को धूल चटा दी। वीर वेद प्रकाश, धर्म प्रकाश, भाई श्याम लाल आदि ने प्राण पण मे अपने यज्ञोपवीत की रक्षा की। उन्होंने अपने प्राण देकर रक्षा बंधन का पर्व मनाया, आणी पर्व उनके गौरवपूर्ण बलिदानों से महिमामंडित हो गया। श्रवणी पर्व पर अब प्रतिवर्ष दक्षिण के वीरों का पुण्य स्मरणा किया जाता है-

उपनयन धारकर अपने नयन खोलिए, भविष्य को उज्जवल बनाइए, अपने मन का मैल मिटाइए।

-आचार्य अनिल शास्त्री

आर्य समाज 15, हनुमान रोड द्वारा वेद प्रचार समारोह

श्रावणी पूर्णिमा (रक्षाबंधन) 30 अगस्त से श्रीकृष्ण जन्माष्टमी 7 सितम्बर 2023 तक

-: कार्यक्रम :-

30 अगस्त प्रातः 8 से 9:30 तक यज्ञोपवीत संस्कार एवं प्रवचन
3 सितम्बर 2023 को प्रातः 9:30 से 10:30 तक सत्याग्रह बलिदान दिवस
5 एवं 6 सितम्बर यज्ञ, भजन प्रवचन एवं भक्ति संगीत
प्रातः 8 से 9:30 सायं 7 से 9

7 सितम्बर यज्ञ पूर्णाहूति एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर भाषण प्रतियोगिता **(विषय वर्तमान मे योगीराज श्रीकृष्ण की प्रासांगिकता) दिल्ली के सभी सेकेन्ड्री स्कूल एवं गुरुकुल के सभी छात्र-छात्राएं भाग लेंगे।**

आप सभी सपरिवार आमंत्रित हैं। -मंत्री, विजय दीक्षित

महर्षि दयानन्द उवाच
परोपकारी एवं प्रेरक शिक्षाएं

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की प्रमुख रचना सत्यार्थ प्रकाश से लेकर उनकी जीवनी, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, संस्कारविधि, व्यवहारभानु, आर्योद्देश्य रत्नमाला, सवमंतव्यामंतव्य प्रकाश, उपदेश मंजरी आदि अनेक ग्रंथों से चयनित परोपकारी और प्रेरक शिक्षाएं आर्य संदेश के नियत नियमित कॉलम में महर्षि दयानंद उवाच के नाम से प्रकाशित की जा रही हैं। सभी पाठकों से अनुरोध है कि महर्षि दयानंद सरस्वती की इन जनकल्याण कारी शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने के लिए सभी आप इनका सोशल मीडिया पर प्रचार-प्रसार करें और महर्षि के ऋण से उऋण होने का प्रयास करें...

असत्यभाषीः- मिथ्या बोलने, मानने और करने वाले को इस जन्म और परजन्म में सुख व प्रतिष्ठा नहीं होती।
(ऋ. द. प. वि. भाग 2 पृ. 626)

असत्य का त्यागः- कभी सत्य बात के करने और झूठ बात के छोड़ने में भय न करें, किन्तु युक्तिपूर्वक इस बात को पूरी करें।
(ऋ. द. प. वि. भाग 2 पृ. 755)

असत्य का परिणामः- थोड़ा सा भी असत्य हो जाने से सम्पूर्ण निर्दोष कृत्य बिगड़ जाता है। ऐसा निश्चय रखो।
(ऋ. द. प. वि. भा. 2 पृ. 695)

जो-जो सर्वमान्य सत्य विषय हैं वे तो सब में एक से है। झगड़ा झूठे विषयों में होता है। **(सत्यार्थ प्रकाश पृ. 445)**

आर्य समाज कोटा (राज.) की ओर से लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला जी का भव्य स्वागत

महर्षि दयानंद सरस्वती के विचार आज अधिक प्रासंगिक : ओम बिरला

माननीय लोकसभाध्यक्ष श्री ओम बिरला जी आर्य उप-प्रतिनिधि सभा कोटा संभाग के प्रधान अर्जुन देव चढ्डा के विज्ञान नगर स्थित निवास पर पहुंचे और उनसे आर्य समाज से सम्बंधित जानकारियों को सांझा किया। महर्षि दयानंद सरस्वती के 200वें जन्मोत्सव तथा आर्य समाज स्थापना के 150 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला जी ने कोटा में आर्य समाज द्वारा संचालित कार्यक्रमों की चित्र प्रदर्शनी का अवलोकन किया और आर्यजनों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती के विचार आज भी प्रासंगिक हैं। वेदों के ज्ञान व शिक्षा पर आधारित आर्य समाज के विचार भारतीय आध्यात्मिक संस्कृति को ऊर्जा प्रदान करते हैं, इन पर चलकर श्रेष्ठ व संस्कारवान समाज का निर्माण संभव है। बिरला जी ने कहा कि कोटा में अर्जुन देव चड्ढा के नेतृत्व में आर्य समाज द्वारा जो गतिविधियां संचालित की जा रही हैं वह सभी के लिए प्रेरणा दायक है। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधियों के साथ सभा प्रधान अर्जुन देव चढ्डा, महामंत्री अरविन्द पाण्डेय, आचार्य शोभाराम आर्य, वैदिक विद्वान, वरिष्ठ मंत्री एडवोकेट चन्द्र मोहन कुशवाह, आर्य पुत्र वरिष्ठ समाज सेवी डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, सभा कोषाध्यक्ष राधावल्लभ राठौर, मंत्री लाल चन्द आर्य, युवा प्रभारी किशन आर्य हरियाणा, गायत्री परिवार ट्रस्ट के मुख्य ट्रष्टि जी. डी. पटेल, पुरोहित श्योराज वशिष्ठ, आर्य पुरोहित भेरूलाल शर्मा, वार्ड 56 के पार्षद विवेक मित्तल, वरिष्ठ समाज सेवी अनिल जैन ठोरा, पर्यावरण संरक्षण समिति के महामन्त्री विनोद अजवानी, राकेश चढ्डा,और पूनम चढ्डा ने ओम बिरला जी का वैदिक मंत्रोचार के साथ साफा बांधकर और मालाएं पहनाकर स्वागत किया।

सोमवार 21 अगस्त, 2023 से रविवार 27 अगस्त, 2023
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि. नं0 डी. एल. (एन. डी.)- 11/6071/2021-22-2023
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 23-24-25 अगस्त, 2023 (बुध-वीर-शुक्रवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-2023
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 23 अगस्त, 2023

नूंह घटना के सम्बन्ध में दिल्ली के समस्त हिंदू संगठनों की बैठक संपन्न

सभा महामंत्री एवं आर्य प्रतिनिधियों की भागीदारी

आर्य समाज हमेशा से हिंदुओं को जागृत कर एकता के सूत्र में बांधने के लिए प्रयासरत रहा है। अभी पिछले दिनों भारत की राजधानी दिल्ली से कुछ ही दूरी पर नूंह मेवात की भयंकर घटना को ध्यान में रखते हुए दिल्ली के समस्त हिंदू संगठनों की एक सामूहिक बैठक सात मंजिला सनातन धर्म मंदिर तिलक नगर में संपन्न हुई। जिसमें पूज्य स्वामी राघवानन्द जी की अध्यक्षता में महन्त अवघूत नाथ जी, महत्मा आनन्द जी, वि.एच.पी. से श्री कपिल खन्ना जी, आर.एस.एस. से भारत भूषण जी, सुरेन्द्र गुप्ता जी एवं ब्रह्मम कुमारी समाज के प्रतिनिधि एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी एवं सभा मंत्री श्री वीरेंद्र सरदाना जी, श्री सुखबीर सिंह आर्य जी, दक्षिण ी दिल्ली वेद प्रचार मंडल के प्रधान श्री रविदेव गुप्ता जी, श्री रविंद्र आर्य जी एवं अनेक अन्य महानुभाव उपस्थित रहे।

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व संपादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्पेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001, फोनः 23360150, 23365959, E-mail : aryasabha@yahoo.com, Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
● संपादकः धर्मपाल आर्य ● सह संपादकः विनय आर्य ● व्यवस्थापकः शिवकुमार मदान ● सह व्यवस्थापकः आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह